



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित किसान समस्याएँ

प्रा. स्वाती विजय बाबर

सहायक प्राध्यापक

ज.ए.इ. महिला महाविद्यालय, जोशी बाग, कल्याण (पश्चिम)

Manuscript ID:

IJAAR-C130354

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 274 - 278

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 10 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. स्वाती विजय बाबर

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786582

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786582>



Creative Commons



सार:

भारत देश एक कृषिप्रधान देश है। आज आधुनिक युग के कारण भारत भले ही कितना भी विकसित हो जाए, लेकिन उसकी जड़ें भूमि से ही जुड़ी हैं। खेती करने वाला किसान अपने खून-पसीने की मेहनत से कृषि कार्य करता है और उसमें फसल उगाकर देश को संपन्न और समृद्ध बनाता है। परंतु आज 21वीं सदी में किसान को अनेक समस्याओं ने घेर लिया है, जिससे वह आत्महत्या करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है। इसका मुख्य कारण कर्ज, जमीन के छोटे टुकड़े, पर्यावरण असंतुलन, विदेशी कंपनियों द्वारा खेती में हस्तक्षेप आदि कारण हैं, जिनसे किसान त्रस्त हो चुका है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में किसान की त्रासदी और उसकी समस्याओं का चित्रण किया गया है तथा हिंदी सिनेमा जगत ने भी किसान की आवाज को पहचानते हुए इस विषय पर अनेक फिल्मों बनाई हैं। इससे देश में एक नई चेतना उत्पन्न हुई है। जैसे 'पिपली लाइव', 'लगान' आदि फिल्मों द्वारा किसान की समस्याओं का चित्रण किया गया है।

मुख्य शब्द: किसान, आत्महत्या, भूमि अधिग्रहण, उपजाऊ प्रदेश, खेती, ओलावृष्टि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. स्वाती विजय बाबर. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित किसान समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 274 - 278. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786582>

हिंदी सिनेमा की भूमिका:

21 वीं सदी में हिंदी फिल्मों में किसान के जीवन-संघर्ष को लेकर अनेक फिल्में बनी हैं। देश में निरंतर किसानों की सामाजिक परिस्थिति खराब होती जा रही है। छोटे और मझोले किसानों की जमीन के कई टुकड़े होते चले गए तथा

उद्योगपतियों की नजर जमीन पर पड़ गई। हिंदी सिनेमा के उद्भव और विकास के साथ फिल्में भारतीय समाज का आईना बनती गई। समाज में घटित घटनाओं को सिनेमा ने समझा और किसान के जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त किया। यह भूमिका हिंदी फिल्मों ने बहुत अच्छे ढंग से निभाई है। इनके माध्यम से



किसान की समस्याओं को समाज के सामने रखकर उन्हें न्याय दिलाने का प्रयास किया गया है। इसमें प्रमुख फिल्मों 'लगान', 'स्वदेश', 'किसान' आदि हैं। ये फिल्में किसानों के संघर्ष को बहुत ही संजीदगी से उठाती हैं। आज के दौर में किसानों के सामने अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, कर्ज का बोझ, दलालों की मुनाफाखोरी, राजनीतिक षड्यंत्र, फसलों का बर्बाद हो जाना आदि कारणों से किसान निरंतर संघर्ष करता रहा है।

हिंदी साहित्य की भूमिका:

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में कहानी, उपन्यास और कविता के माध्यम से किसान की समस्याओं का चित्रण किया गया है। 21वीं सदी को वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी क्रांति की सदी माना जाता है, लेकिन किसान का विकास अपेक्षित रूप से नहीं हुआ। वह निरंतर संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है और अंततः आत्महत्या कर लेता है या जमींदारों द्वारा शोषित होता है। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद से लेकर समकालीन साहित्यकारों ने किसान जीवन को केंद्र में रखा है। प्रेमचंद के 'गोदान', 'पूँस की रात' आदि साहित्यिक कृतियों में किसान की त्रासदी का चित्रण मिलता है। 21वीं सदी में यह परंपरा नए संदर्भों के साथ आगे बढ़ी है। हिंदी सिनेमा, जो पहले किसान को आदर्शवादी या राष्ट्रवादी प्रतीक के रूप में दिखाता था, अब उसे यथार्थवादी और संकटग्रस्त रूप में प्रस्तुत कर रहा है। यह परिवर्तन और समस्याओं का गंभीर अध्ययन प्रस्तुत करता है।

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में किसान समस्याएँ:

1. ऋणग्रस्तता और आर्थिक शोषण: समकालीन कथा साहित्य में किसान की ऋणग्रस्तता प्रमुख विषय है। यद्यपि मुंशी

प्रेमचंद ने 'गोदान' में किसान शोषण का चित्रण किया है, किंतु 21वीं सदी में यह समस्या बैंकिंग प्रणाली और कॉर्पोरेट कृषि के संदर्भ में अधिक जटिल हो गई है।

2. किसान आत्महत्या: किसान अकाल और आर्थिक तंगी के कारण मृत्यु को चुनता है। विदर्भ और मराठवाड़ा के संदर्भ में अनेक कविताएँ और कहानियाँ लिखी गई हैं। साहित्य में किसान की मानसिक पीड़ा और सामाजिक अपमान को मार्मिक रूप से व्यक्त किया गया है।

3. भूमि अधिग्रहण: 21 वीं सदी के साहित्य में भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं बल्कि किसान की अस्मिता है। औद्योगिकीकरण और विकास परियोजनाओं के नाम पर भूमि अधिग्रहण किसान को जड़ों से उखाड़ देता है। कविता और उपन्यासों में जमीन छीनने का दर्द, पीढ़ियों की स्मृतियों के नष्ट होने का शोक और भविष्य की अनिश्चितता गहराई से व्यक्त हुई है।

4. जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ: अनिश्चित मानसून, सूखा, बाढ़ और ओलावृष्टि ने खेती को अस्थिर बना दिया है। समकालीन कविता में टूटती फसलें, खाली खलिहान और आसमान की ओर टकटकी लगाए किसान का चित्र बार-बार उभरता है।

5. मानसिक और सामाजिक दबाव: साहित्य में किसान का अवसाद, चुप्पी और आंतरिक संघर्ष अत्यंत मार्मिक रूप में उभरता है। वह अपने परिवार, समाज और परंपराओं की अपेक्षाओं के बोझ तले दबा हुआ दिखाई देता है। साहित्य में प्रकृति और किसान के संबंध को संवेदनात्मक ढंग से चित्रित किया गया है।



21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में किसान समस्याएँ:

1. आत्महत्या और मीडिया: हिंदी सिनेमा में 'पिपली लाइव' (2010) में किसान आत्महत्या की समस्या को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। फिल्म यह दिखाती है कि किस प्रकार मीडिया और राजनीति किसान की पीड़ा को संवेदनहीनता से देखती है।

2. ऐतिहासिक शोषण और प्रतीकात्मक संघर्ष: 'लगान' फिल्म में औपनिवेशिक कृषि व्यवस्था के माध्यम से किसान के आर्थिक शोषण को दर्शाया गया है। यद्यपि यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, परंतु इसका प्रतीकात्मक अर्थ आज के किसान संकट से जुड़ता है।

3. ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण: समकालीन सिनेमा में ग्रामीण परिवेश, बेरोजगारी और कृषि संकट को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। फिल्मों के माध्यम से किसान की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को राष्ट्रीय विमर्श का विषय बनाया गया है।

हिंदी साहित्य और सिनेमा का तुलनात्मक विश्लेषण:

हिंदी साहित्य गहराई और विस्तार के साथ किसान की समस्या का आंतरिक चित्र प्रस्तुत करता है, जबकि सिनेमा दृश्यात्मक प्रभाव और व्यापक जनसंपर्क के माध्यम से इन मुद्दों को लोकप्रिय बनाता है। साहित्य किसान की मनस्थिति, संवेदना और विचारों में उतरता है, वहीं सिनेमा उसकी समस्याओं को सामाजिक-राजनीतिक विमर्श में बदल देता है।

पंकज सुबीर के 'अकाल में उत्सव' उपन्यास में सरकार की गलत नीतियाँ, बिचौलिए, कुदरत की मार, सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि एवं मौसम की अनियमितता ने किस तरह किसान के जीवन को नर्क बना दिया है, यह देखने को मिलता है। इसमें किसानों के दुःख-दर्द का वर्णन हुआ है। साथ ही सत्ता और

प्रशासन की संवेदनहीनता को भी उजागर किया गया है। खेत में ओला गिरने के कारण रामप्रसाद नामक किसान का भविष्य अंधकार में चला जाता है और कर्ज के जंजाल से मुक्त होने के लिए वह आत्महत्या कर लेता है। वहीं दूसरी तरफ सरकारी तंत्र अपनी झूठी और कागजी उपलब्धियों के जश्न में नगर उत्सव के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च कर देता है।

'जमीन' उपन्यास की रचना भीमसेन त्यागी ने 2004 में गरीब किसानों और मजदूरों के जीवन को आधार बनाकर की है। उपन्यास की शुरुआत आजादी से होती है और पंडित जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु पर समाप्त होती है। किसान एवं खेतीहर मजदूर जमींदारों के शोषण और अत्याचार से दबे हुए हैं।

'स्वदेश' फिल्म में नासा में वैज्ञानिक युवा मोहन का अपने भारत के प्रति प्रेम झलकता है। वह भारत वापस आकर यहाँ की समस्याओं को हल करने का प्रयास करता है। उसे यहाँ की मिट्टी, वायु, जल, धरती माँ और भोले-भाले ग्रामीण किसान, उनकी संस्कृति और सभ्यता से बेहद लगाव है। वह अमेरिका छोड़कर वापस अपने देश की सेवा में लग जाता है।

सोहा अली खान प्रोडक्शन में बनी फिल्म 'किसान' पंजाबी किसानों की व्यथा को प्रस्तुत करती है। भारत के बेहद उपजाऊ प्रदेशों में से एक पंजाब में किसान सरकार के नुमाइंदों से बहुत परेशान है। कंपनियों का बढ़ता प्रभाव, राजनीति का सहयोग एवं भूमाफियाओं के आतंक से किसान अपनी जमीन कंपनियों को बेचता जा रहा है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, समकालीन उदाहरण एवं आलोचनात्मक विश्लेषण:

1. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि: 21 वीं सदी में किसान समस्याओं के विश्लेषण को समझने के लिए विभिन्न आलोचनात्मक सिद्धांतों



की सहायता ली जा सकती है। सर्वप्रथम मार्क्सवादी दृष्टिकोण किसान संकट को वर्ग-संघर्ष और उत्पादन संबंधों के परिप्रेक्ष्य में देखता है। कृषि व्यवस्था में पूंजी, बाजार और श्रम के असमान संबंध किसान को शोषित वर्ग के रूप में स्थापित करते हैं। प्रेमचंद ने 'गोदान' में होरी के माध्यम से इसी वर्गीय शोषण को चित्रित किया है। उनका प्रसिद्ध कथन— “कर्म वह मेहमान है जो एक बार आकर जाता नहीं”— आज भी 21 वीं सदी के किसान की स्थिति पर सटीक बैठता है।

द्वितीय, उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श के अंतर्गत किसान समस्या को वैश्वीकरण और नव-औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों से जोड़ा जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बीज, खाद और बाजार पर नियंत्रण एक नई निर्भरता की स्थिति उत्पन्न करता है। भूमि अधिग्रहण और कॉर्पोरेट कृषि की प्रक्रिया किसान को उसकी पारंपरिक जमीन और अस्मिता से दूर करती है।

तृतीय, पर्यावरणीय आलोचना (ईको-क्रिटिसिज़्म) जलवायु परिवर्तन, सूखा, बाढ़ और ओलावृष्टि को केवल प्राकृतिक संकट नहीं, बल्कि विकास मॉडल की विफलता के रूप में देखती है।

2. समकालीन उदाहरण: समकालीन हिंदी साहित्य में पंकज सुबीर के 'अकाल में उत्सव' में सरकारी तंत्र की संवेदनहीनता और बाजार-केन्द्रित नीतियों की आलोचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी प्रकार भीमसेन त्यागी के 'जमीन' में जमींदारी शोषण से लेकर स्वतंत्र भारत की सामाजिक असमानताओं तक का यथार्थ चित्रण है। हिंदी सिनेमा में 'पीपली लाइव' (2010) समकालीन मीडिया की भूमिका पर तीखा व्यंग्य करती है। फिल्म में संवाद आता है—“सवाल ये नहीं कि किसान मरेगा या नहीं, सवाल ये है कि खबर बनेगी या नहीं।”

3. उद्धरण और वैचारिक संदर्भ: प्रेमचंद ने किसान जीवन की करुणा को व्यक्त करते हुए लिखा है— “गरीब आदमी के लिए जीवन एक निरंतर संघर्ष है।” यह कथन आज भी किसान की परिस्थितियों को रेखांकित करता है। समकालीन कविताओं में भी किसान की पीड़ा मुखर है। एक कविता में कहा गया है— “सूखी धरती की दरारों में / उसकी आँखों की नमी बसती है।”

4. आलोचनात्मक विश्लेषण: आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी साहित्य किसान समस्याओं की जड़ों तक पहुँचने का प्रयास करता है। वह आर्थिक नीतियों, सामाजिक संरचना और मानसिक तनाव का विश्लेषण करता है। साहित्य का स्वर अधिक चिंतनशील और आत्मविश्लेषणात्मक होता है। दूसरी ओर, हिंदी सिनेमा व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचने के कारण कई बार समस्या को सरल या नाटकीय रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार साहित्य और सिनेमा दोनों ही किसान समस्या को अलग-अलग कोणों से प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष:

यह स्पष्ट है कि 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा ने किसान की समस्याओं को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया है। किसान अब केवल करुणा का पात्र नहीं बल्कि व्यवस्था से सवाल करने वाला जागरूक नागरिक बन गया है। साहित्य और सिनेमा दोनों ने मिलकर किसान संकट को सामाजिक चेतना का विषय बनाया है। यह रचनात्मक हस्तक्षेप न केवल यथार्थ का दस्तावेज है, बल्कि भविष्य के लिए चेतावनी भी है कि यदि किसान की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो विकास की संपूर्ण अवधारणा अधूरी रह जाएगी।



संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. प्रेमचंद – गोदान
2. पंकज सुबीर – अकाल में उत्सव (उपन्यास)
3. भीमसेन त्यागी – जमीन (उपन्यास)
4. पीपली लाइव – निर्देशक: अनुषा रिजवी (फिल्म)
5. लगान – निर्देशक: आशुतोष गोवारिकर (फिल्म)
6. स्वदेश – निर्देशक: आशुतोष गोवारिकर (फिल्म)
7. किसान – निर्देशक: पुणीत सीरा (फिल्म)